त्रिपुरा की लोककथाएँ

भाग-८

मिलन रानी जमातिया

मुखरा-चामुरोई

बहुत पुरानी कथा है। एक किसान परिवार था। उसकी सात बेटियाँ थीं। सातों बेटियाँ सुशील थीं, लेकिन सबसे छोटी बेटी सुशील होने के साथ खूबसूरत भी थी। एक दिन वे बैंगन तोड़ने खेत गई।

खेत में जाकर उन्होंने देखा, एक बन्दर, चुन-चुन कर बैंगन खाए जा रहा था। सबसे छोटी बहन ने यह देखा। उसने बड़ी बहनों को दिखाया और एक कुत्ते को उस बन्दर के पीछे छोड़ दिया। कुत्ता दौड़कर उसे पकड़ने गया। परन्तु वह पहले ही पास के एक पेड़ पर चढ़ गया। बन्दर को छोटी बहन पर बहुत गुस्सा आया। उसने मन ही मन प्रतिज्ञा की कि वह इसका बदला अवश्य लेगा।

सातों बहनों ने बैंगन तोड़कर टोकरी को भरा। कुत्ता भी उनके साथ इधर-उधर घूम रहा था। दोपहर के समय उनका खाने का वक्त था। वे एक-दूसरे को बुलाने लगी, क्योंकि उन्हें नहाना भी था। वे अपना रिगनाई-रिसा किनारे रखकर रितुकुक (गमछा) पहनकर नदी में नहाने लगी।

उधर वह बन्दर छिपकर देख रहा था। जब बहनें नहाने में व्यस्त थीं, एक कुत्ता भी पेड़ के नीचे सो रहा था। मौका मिलते ही बन्दर पेड़ से उतरा और उनके कपड़े लेकर फिर पेड़ पर चढ़ गया।

नहाने के बाद बहनों ने ऊपर आकर देखा तो उनके कपड़े वहाँ नहीं थे। क्या हुआ? कहाँ गये? कौन ले गया? यह कहती हुई वे अपने कपड़े ढूँढ़ने लगीं। उसी समय पेड़ हिल उठा। उन्होंने ऊपर देखा, वह